E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2022; 4(4): 05-07
www.allstudyjournal.com
Received: 27-07-2022
Accepted: 06-09-2022

अजिता त्रिपाठी
शोधार्थी, हिन्दी भवन, विश्वभारती
शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल, भारत

Corresponding Author:
अजिता त्रिपाठी
शोधार्थी, हिन्दी भवन, विश्वभारती
शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल, भारत

कुँवर नारायण की कविताओं में समाज

अजिता त्रिपाठी

प्रस्तावना

कुँवर नारायण अपनी रचनाओं में विलुप्त मूल्यों के प्रति चिंतित और जाग्रत हैं | मूल्य को उन्होंने समाज, साहित्य और जीवन से जोड़कर कर देखा हैं | किसी भी मूल्य का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है | मानव जीवन के बिना साहित्य और समाज का कोई महत्व नहीं हैं | साहित्य जीवन के भावों का प्रतिनिधित्व करता है तो समाज मनुष्य जीवन में भावों का जन्मदाता है | कवि अपने जीवन, समाज और साहित्य में 'सादगी' को विशेष महत्व देता है | कवि के शब्दों में 'सादगी किसी अभाव की नहीं अपितु संस्कृति की परिभाषा' है | ये संस्कृति सबका निर्माण या विकास समान रूप से करती है | संस्कृति हमारे विचारों का प्रतिनिधित्व करती है | विचार सबके भिन्न भिन्न हो सकते हैं पर सबके मूल में 'वसुधैव कुटुम्बकं' की भावना छिपी हुई है | विचारों की भिन्नता व्यक्ति स्वातंत्र्य का प्रतीक है |

वर्तमान समाज में मनुष्य के साथ बहुत से अन्याय हो रहे हैं | ये अन्याय तमाम तरह की विसंगतियों को जन्म दे रहे हैं | मनुष्य नकारात्मक विचारों की ओर बढ़ रहा है | वह दुविधाओं में उलझ कर रह गया है | इन दुविधाओं से निकलने के लिए उसका संघर्ष जारी है | इन संघर्षों के बीच एक चोर की भांति सावधानीपूर्वक सार्थक जीवन जीने की थोड़ी सी कोशिश ही मनुष्य की जिजीविषा शक्ति का प्रमाण है | जैसा की कवि भी कहता है –

अपराधी की तरह पकड़ा जाता रहा बार-बार
अद्भुत कुछ जीने की चोर कोशिश में [1]

संसार में जीते हुए मनुष्य के सामने रोज कई नए प्रश्न जन्म लेते हैं | 'प्रश्न' ही कवि की रचनाओं का मुख्य नायक या चरित्र रहा है | कवि सभी को प्रश्न उठाने को प्रेरित करता है | प्रश्न उठाने का मतलब गलत के खिलाफ अपनी आवाज को मुखर करना है | जीवन का संबंध विभिन्न प्रश्नों से है | जहां प्रश्न उभरते हैं वहां कवि की बौद्धिकता तथा जहां जीवन में प्रेम आता है, वहां कवि में हृदय पक्ष की प्रधानता देखने को मिलती है | कवि कहता है-

इतना कुछ था दुनिया में / लड़ने झगड़ने को
मरने मारने को / पर ऐसा मन मिला
कि जरा से प्यार में डूबा रहा
और जीवन बीतता रहा [2]

कवि की रचनाओं में जहां बुद्धि जाग्रत होती है, वहां जीवन को चक्रव्यूह में परिवर्तित होते हुए देखा जा सकता है | प्रेम के द्वारा हृदय चक्रव्यूह को भेद कर 'आत्मजयी' होने तक की यात्रा को सफल बनाता है | आत्मजयी का नचिकेता, चक्रव्यूह का अभिमन्यु और वाजश्रवा के बहाने का वाजश्रवा प्रश्न उठाकर लोगों में 'आत्मबल' का संचार करता है | ये पौराणिक पात्र सिर्फ हमारी स्मृति का हिस्सा भर नहीं हैं अपितु मुश्किल समय में ये हमारे साथ खड़े नजर आते हैं |

कवि हमारे जीवन को एक नया मानवीय अर्थ देने की कोशिश करता है | वह चाहता है कि हर व्यक्ति अपनी लड़ाई अभिमन्यु की भांति अकेले ही साहसपूर्वक लड़े | जीवन में हार न मानने की कोशिश ही कवि को चक्रव्यूह से आत्मजयी बनने की तरफ ले जाती है | जैसा कि कवि कहता है –

तुझको अपनी
घोरतम निराशा से ही बल लेना होगा |
मृत संस्कारों से अपना जीवन खाली कर
उस खाली-पन को नया मर्म देना देना होगा
केवल शरीर के लिए नहीं
तुझको शरीर के बावजूद जीना होगा |[3]

जीवन में आई हुई निराशा को भी आशा में परिवर्तित कर मनुष्य को आगे बढ़ना होगा | जीवन की निराशा को श्रेष्ठ संकल्प और कामना से दूर किया जा सकता है | इसकी प्रेरणा हम वाजश्रवा के चरित्र से ले सकते हैं, जो कारागार में बंद रहते हुए भी अपनी श्रेष्ठ रचनाओं से जगत को परिचित करवाता है –

'एक कारागार में भी संभव है/ प्रतिदिन एक नया जीवन' [4]

'जीने की संभावना' कवि की रचनाओं का केंद्र है | जीवन जीने के बीच मनुष्य तमाम तकलीफों और दर्द से गुजरता है, जिसे कवि बड़ी बारीकी से चित्रित करता है | कुँवर नारायण अपनी रचनाओं के द्वारा सदैव संघर्षरत मनुष्य के पक्ष में खड़े हुए दिखाई पड़ते है | वह उन मानवीय मूल्यों को जीवित रखने की कोशिश करते हैं, जो मनुष्यता में विश्वास रखता है | उन्हें विश्वास है कि प्रत्येक सच्चा मनुष्य उपजी परिस्थितियों का सामना करते हुए सत्य के साथ खड़ा नजर आएगा |
कवि कहता है –

कोई चाहे भी तो रोक नहीं सकता
भाषा में उसका बयान
जिसका पूरा मतलब है सचाई
जिसकी पूरी कोशिश है बेहतर इंसान [5]

कवि अपनी रचनाओं के द्वारा 'बेहतर इंसान' को बचाने की कोशिश करता है | बेहतर इंसान बनने के लिए, बेहतर कर्म करने पर कवि बल देता है | तुलसी ने भी कहा था, 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा,जो जस करई सो तस फल चाखा' | गीता में भी कहा गया है, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' | निष्क्रिय व्यक्ति का समाज में अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है | कर्म करता हुआ, संघर्षों से लड़ता हुआ व्यक्ति ही समाज को आगे ले जा सकता है |
कवि समाज में आई तमाम विसंगतियों पर चोट करता है | वह समाज में ऐसी व्यवस्था चाहता है जो मनुष्य की निजता अर्थात व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भी महत्व देता है | समाज में अपनी बात बिना किसी भय के रख देना व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सबसे बड़ा उदाहरण है |
'अभिव्यक्ति की आजादी' सर्वोपरि है | अपनी अभिव्यक्ति को दूसरों के नियंत्रण में होते देखना आज के सामाजिक व्यवस्था की सबसे भयावह तस्वीर है | जिसे सदैव से कुछ अमानवीय लोगों ने अपने अधिकार में रखने की कोशिश की है | इस अधिकार का परिणाम साधारण जनता भुगत रही है | जैसा की कवि कहता है –

धर्मराज धूर्तराज दोनों जुआड़ी
पाँसे खनखनाते हुए
राजनीति में शकुनि का प्रवेश
दलों के दलदल में जूझ रहे
आठ धर्म, अट्ठारह भाषाएं, अट्ठाइस प्रदेश [6]

सत्ता पर आसीन तथाकथित धर्मराज, धूर्तराज के साथ मिलकर निजी स्वार्थ और महात्वाकांक्षा की पूर्ति कर रहे हैं | सत्ताधीसों को देश की स्थिति से कोई मतलब नहीं है | वो जनता का शोषण कर खुद का पोषण कर रहे हैं | कवि गोरख पांडेय कहते हैं –

काजू भुनी है प्लेट में, व्हिस्की गिलास में
उतरा है रामराज्य विधायक निवास में

छल और प्रपंच का सहारा लेकर इन सत्ताधीसों ने देश को सदैव गर्त की ओर धकेला है | भाषा, धर्म और जाति के नाम पर जगह-जगह उन्माद और वैमनश्य फैलाया जा रहा है | ईश्वर भी आज की राजनीति का शिकार हो गया है | आज जिस अयोध्या में उसके भव्य मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है, उस अयोध्या के स्वरूप को कवि ने बहुत पहले ही स्पष्ट कर दिया था –

अयोध्या इस समय तुम्हारी अयोध्या नहीं
योद्धाओं की लंका है / 'मानस' तुम्हारा 'चरित' नहीं चुनाव का डंका है [7]

आज ईश्वरीय आस्था का भी व्यापार किया जा रहा है | चुनाव जीतने के समय मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताओं शिक्षा, रोटी, कपड़ा मकान पर ध्यान केंद्रित न करके 'ईश्वर' को बीच में लाया जा रहा है | ईश्वर के आते ही बुनियादी सवालों को खत्म होने का मौका मिल जाता है | समाज में उत्पन्न इस जटिलता को समझते हुए कवि सदैव 'हक की लड़ाई' के लिए लोगों को जागरूक करता है |
सत्ता के उलझाव से बाहर निकलना बहुत कठिन है | इस उलझाव से निकलने के लिए हमें लड़ना होगा | इस लड़ाई से हम बच नहीं सकते हैं | कवि कहता है –

आज नहीं कल सही – लड़ना तो होगा ही
कहाँ तक न बोलेगी आखिर बेगुनाही [8]

यह बेगुनाही या निर्दोषता ही मनुष्य का साथ देगी, उसमें आत्मविश्वास भरेगी ताकि वह गलत से गलत समय में भी सही बात कहने की ताकत रख सके | सही बात करने का एक छोटा सा प्रयास भी सत्ता के खिलाफ विरोध का रूप धारण कर सकती है | समाज और सत्ता की नकारात्मकता को झेलते हुए आगे बढ़ने की छोटी सी कोशिश भी मनुष्य के उन्नत व दुनिया के विकसित होने की कहानी है |
सामाजिक अव्यवस्था को सिर्फ नारों और बयानों से नहीं बदला जा सकता है, उसे बदलने के लिए हमें साथ मिलकर लड़ना होगा | सबसे मिलने का मतलब संवाद की स्थिति कायम रखना होगा | ये संवाद तभी संभव है जब हमारे भीतर प्रेम और संवेदना बची होगी | 'प्रेम' की तरफ लौटना ही सबसे जुड़ना है | जैसा की कवि कहता है –

लौटना है मुझे / प्रेम की तरफ
विश्वास बनाए रखना है / मनुष्य में
सिद्ध करते रहना है कि मैं टूटा नहीं [9]

प्रेम करने की कोशिश करते रहना ही मनुष्यता की पक्षधरता का सबसे बड़ा सबूत है | कवि मनुष्य के संघर्ष को जीवन का सच्चा रूप मानता है | जीवन में कोई 'शॉर्टकर्ट' नहीं होता, मंजिल धैर्य के साथ ही प्राप्त की जा सकती है | कवि के शब्दों में धैर्य के रास्ते में ही फूल खिलते हैं अर्थात कर्म करते रहो फल की चिंता मत करो |
कवि जीवन को उत्सव की भांति जीने को कहता है | उसकी कविताएं मनुष्य के संघर्ष के प्रति आस्था और विश्वास रखती है | वह पराजित मनुष्य को देखकर हँसते नहीं है | उसके हार मानने के स्वीकार को साहस का रूप प्रदान करते हैं | हार से ही जीत की शुरुआत होगी| 'एक अन्य प्रारंभ' में वे कहते हैं –

उठाओ संकल्प की पहली ईट
स्मृति शिलाओं से ज्यादा जरूरी है / शिलान्यास [10]

कवि की कविताओं ने सदैव मनुष्य को एक सही शुरुआत के लिए प्रेरित किया है | सही शुरुआत के लिए युद्ध की नहीं प्रेम की आवश्यकता है | कवि आज हमारे बीच में नहीं है पर उसके विचार हमारे साथ चल रहे हैं | अपनी रचनाओं के द्वारा कवि हमारे बीच सदैव जीवित रहेगा |

संदर्भ सूची –

1. नारायण कुँवर, अपने सामने, पृ.15, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1989

2. नारायण कुँवर, हाशिये का गवाह, पृ.71, मेधा बुक्स, दिल्ली, सं. 2014
3. नारायण कुँवर, आत्मजयी, पृ.95, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली,सं. 2015
4. नारायण कुँवर, कुमारजीव, पृ.121,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली,सं. 2015
5. नारायण कुँवर, कोई दूसरा नहीं, पृ.53, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011
6. नारायण कुँवर, कोई दूसरा नहीं, पृ.69, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011
7. नारायण कुँवर, कोई दूसरा नहीं, पृ.70, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011
8. नारायण कुँवर, कोई दूसरा नहीं, पृ.152, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011
9. नारायण कुँवर, कोई दूसरा नहीं, पृ.129, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011
10. नारायण कुँवर, वाजश्रवा के बहाने, पृ. 56, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2017